कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या.... 3312603

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words)----------

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ----------

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [ ] अंग्रेजी [ ]

विषय हिन्दी

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 4 मार्च, 2017

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक [ ]

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

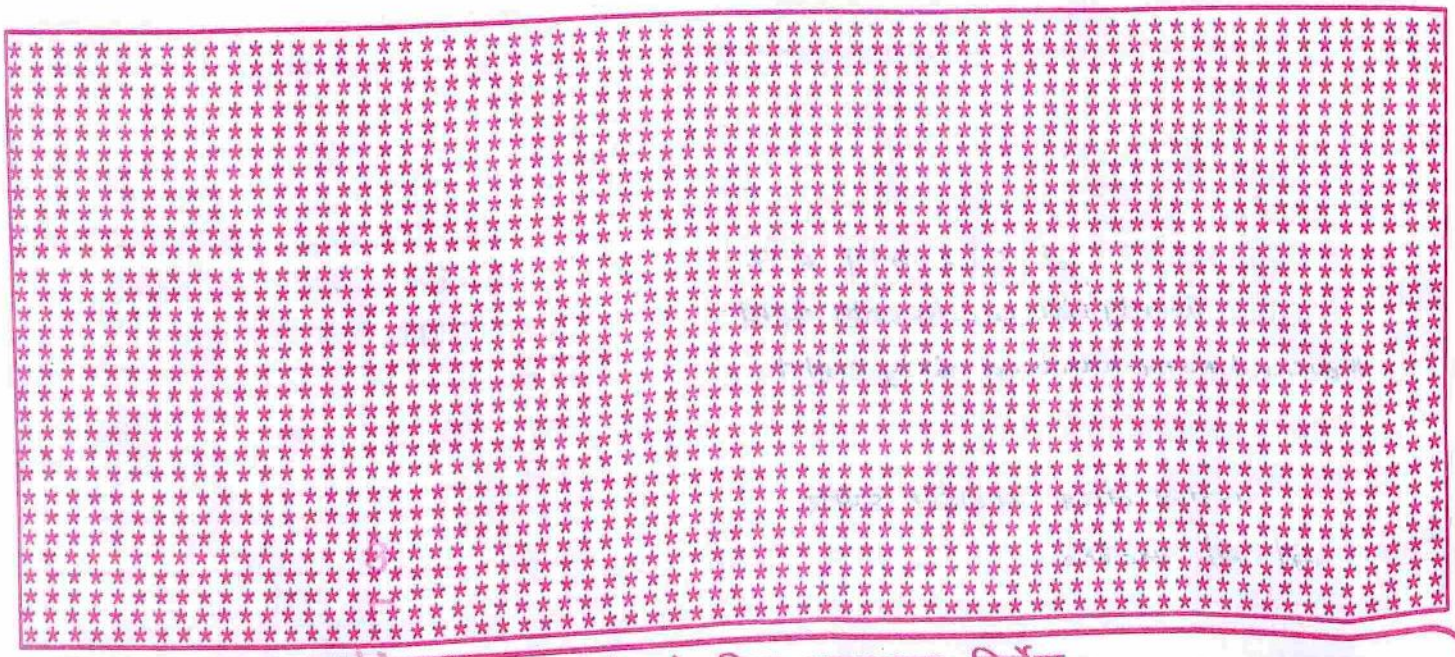

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्यामेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जाँच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा ____ अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	प्र.1 (अ)	यदि भारतीय नवयुवक दृढ संकल्प कर लें तो वह आँधीयों को मोड़ सकते हैं, वे आसमान के तारे भी तोड़ सकते हैं। वे ठान लें तो वे इतिहास के सुनहरे पन्नों में अपने यश का सुनहरा अध्याय लिख सकते हैं।
	(ब)	नवयुवकों से कहा जा रहा है कि वे अपने विचारों की गंगा बहाऐं उनको तूफानों से डरना नहीं है बल्कि उनका सामना करते हुए देश का नाम उज्ज्वल करें। उन्हें अपने बाहुबल को जगाने का आग्रह किया जा रहा है।
	(स)	युवक यदि परिश्रम करें और पसीना बहाऐं तो हीन-हीनों को जीवन दिला सकते हैं तथा धूल में भी सोने के फूल खिला सकते हैं।
	(द)	'कहीं भी धूल में तुम सोने के खिला दोगे फूल' पंक्ति का भावार्थ यह है कि यदि युवक चाहें तो अपनी लगन व मेहनत से देश को विकसित व सुविधा सम्पन्न बना सकते हैं।
	प्र.2 (अ)	स्थायी सुख व शांति पाने के लिये हमें हिंसा के मार्ग को छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपनाना होगा तथा हर व्यक्ति के साथ प्रेम का व्यवहार रखना होगा।
	(ब)	विश्व अशान्ति का कारण निरंतर होते युद्ध व मार-काट, हिंसा है जिससे सब आतंकित हैं। हमें इसे दूर करने के लिए शांति तथा मित्रता की भावना लोगों में जागृत करनी होगी।

परीक्षक द्वारा | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(स) आज देश को गाँधीजी के अहिंसा वादी मार्ग की आवश्यकता है। क्योंकि इस मार्ग पर चलकर ही मानव कल्याण का पथ आलोकित किया जा सकता है।

(द) देश के प्रति हमारा कर्तव्य है कि हम अहिंसा के आदर्शों को अपनाकर मानवता के दीप प्रज्वलित करें। यही आज के युग का परम धर्म है।

Q3

(स) पर्यावरण संरक्षण : जीवन का मूल आधार

भूमिका :- प्रस्तावना
(i) पर्यावरण प्रदूषण का तात्पर्य
(ii) पर्यावरण प्रदूषण की हानियाँ
(iii) पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता
(iv) उपसंहार
(v)

(i) प्रस्तावना :- मनुष्य का जीवन सदा से ही प्रकृति पर निर्भर है। उसके इस धरती पर आने से पहले ही यहाँ पर पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, हवा, पानी की सृष्टि की जा चुकी थी जो कि उसके जीवन जीने के लिये उपयोगी थे। परन्तु वर्तमान समय में मनुष्य ने उन्हीं जीवन दायी वस्तुओं को क्षति पहुँचायी है उसने उन्हें प्रदूषित किया है अतः उनका संरक्षण अति आवश्यक हो गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) पर्यावरण प्रदूषण का तात्पर्य :- कहा जाता है कि मानव शरीर का निर्माण पाँच तत्वों - जल, वायु अग्नि, हवा तथा धरती से मिलकर हुआ है। यदि इनमें से कोई भी एक तत्व रुष्ठ हो जाये तो शरीर तथा धरती का संतुलन बिगड़ सकता है। हमारे चारों ओर इन्हीं तत्वों से मिलकर बना 'पर्यावरण' आज प्रदूषित होता जा रहा है जो कि बड़ी चिंता का विषय है पर्यावरण प्रदूषण कई प्रकार से होता है - जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि। हमें चाहिए कि हम बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण को रोकें उसके लिए उचित कदम उठायें।

(iii) पर्यावरण प्रदूषण की हानियाँ :- पर्यावरण प्रदूषण से हमें अनेक प्रकार की हानियाँ होती है। क्योंकि यह अलग-अलग प्रकार से होता है जिनसे होने वाली हानियाँ भी अलग-अलग होती हैं।
जैसे - ध्वनि प्रदूषण के कारण - मनुष्य को सुनने की समस्या, तनाव, सिरदर्द आदि समस्याओं का सामान करना पड़ता है। उसी प्रकार वायु प्रदूषण के कारण साँस लेने में परेशानी होती है विभिन्न प्रकार की एलर्जी हो जाती है हमारे फेंफड़े तक खराब हो सकते हैं तथा जल प्रदूषण के कारण - जब हम अशुद्ध जल ग्रहण करते हैं तो हमारा सिर चकराने लग जाता है, हमें उल्टी, दस्त तथा पीलीया जैसे रोग घेर लेते हैं कभी-कभी तो प्रदूषण इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति की मौत तक हो जाती है। आज हमारे देश की राजधानी 'दिल्ली' जिसे दिल वालों का शहर कहा जाता है सबसे ज्यादा प्रदूषण की मार झेल रही है। वहाँ पर रहने वाले लोगों का जीवन बदहाल हो चुका है बड़े बुजुर्ग

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तथा साँस की समस्या वाले मरीजों के लिए तो दिल्ली बिल्कुल भी सुरक्षित नहीं है उन्हें बीमारियों का खतरा सबसे अधिक घेरे रहता है। अतः इस ओर सरकार को ध्यान देना चाहिए।

(iv) पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता :- बढ़ते हुए पर्यावरण प्रदूषण को ध्यान में रखकर ऐसा लगता है कि हमें पर्यावरण संरक्षण की महती आवश्यकता है। इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी जी ने 'स्वच्छता अभियान' चलाया जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति कूड़ा कचरा इधर-उधर न फेंक कर कूड़े दान में ही फेंके। पर्यावरण संरक्षण के लिये हमें चाहिए की हम जगह-जगह कचरा पात्र रखें, लोगों को प्लास्टिक की थैली जलाने से होने वाले पर्यावरण प्रदूषण से अवगत करायें, चिमनियों से निकलने वाले हानिकारक धुँऐं व अवशिष्ट को फिल्टर करके ही बाहर छोड़ा जाये, शहर में जगह-जगह ध्वनि अवशोषक यंत्रों का प्रयोग किया लकड़ी के स्थान पर प्राकृतिक गैस का उपयोग खाना बनाने में किया जाये' इन सब उपायों से हम पर्यावरण को सुरक्षित रख सकते हैं और हमें अधिक वृक्षारोपण भी करना चाहिए तथा लोगों को भी इसके लिये जागृत करना चाहिए।

(v) उपसंहार :- हमें हमारे चारों ओर के परिवेश को साफ-सुथरा रखना चाहिए जिससे हमें शुद्ध वायु तथा वातावरण प्राप्त हो जो कि आज के समय में हमारी परमावश्यक वस्तु है जिससे हम स्वस्थ रह पायेंगे और हमारा पर्यावरण इसमें महत्वपूर्ण योगदान देता है।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र.4

स्वतंत्रता दिवस समारोह

17 अगस्त, 2016, भरतपुर। हमारे विद्यालय, राजकीय उच्च माध्यमिक, स्कूल, भरतपुर में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया गया। प्रातः सुबह 8:00 बजे विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने प्रभात फेरी निकाली और 8:30 बजे सभी छात्र-छात्रा विद्यालय प्रांगड़ में उपस्थित हुये। वहाँ हमारे प्रधानाचार्य महोदय ने ध्वजारोहण किया जाता छात्राओं ने राष्ट्रगान का गायन किया तत्पश्चात प्रधानाचार्य महोदय ने बच्चों को स्वतंत्रा प्राप्ति के इतिहास तथा शहीदों के योगदान के बारे में छात्रों को विस्तार से बताया। तत्पश्चात हिन्दी के अध्यापक 'चन्द्र प्रकाश शर्मा' ने गणतंत्र से सम्बन्धित गीत सुनाया। छात्र-छात्राओं ने भी इस अवसर पर नाटक तथा एकांकी प्रस्तुत की। सभी छात्र-छात्राओं को उपहार भी आवंटित किये गये। उसके बाद प्रधानाचार्य महोदय ने सभी को देश भक्ति का सन्देश दिया तथा उन्हें भी ऐसा ही देश भक्त बनने को कहा। अंत में चाय पान तथा छात्रों में मिष्ठान वितरण के साथ समारोह समाप्त हुआ।

BSER-16

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र॰ (3)

पत्रांक - 09/29/209 दिनाँक - 4 फरवरी, 2017

प्रेषक :- कपिल,
सैक्रेटरी,
जवाहर नगर कॉलोनी, भरतपुर।

प्रेषिति :- पुलिस अधिकारी,
कुम्हेर, भरतपुर।

विषय :- आयेदिन होने वाली चोरीयों को रोकने हेतु।

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है कि हमारे मोहल्ले, जो कि जवाहरनगर कॉलोनी का block-B है, में आये दिन चोरीयों की बारदात हो रही है। रातों को चोर लोगों के घर में घुसकर चोरीयाँ करले जाते हैं। जब लोग जागते हैं तो सब कुछ लुटा देख रो पड़ते हैं। अब उनकी हिम्मत इतनी बढ़ गई है कि दिन में राह चलती महिलाओं को भी लूट लेते हैं। वे मोटरसाइकिल पर आते हैं और महिलाओं के हाथ से पर्स, फोन या गले की जंजीर छीन कर भाग जाते हैं।

अतः उपरोक्त समस्या के समाधान हेतु उचित कदम उठाने की महती आवश्यकता है। कृपया इस ओर जरूर ध्यान दें और तुरंत कार्यवाही करें तभी हम रात को चैन से सो पायेंगे।

'धन्यवाद'

भवदीय
हस्ताक्षर - कपिल,
सैक्रेटरी,
जवाहर नगर कॉलोनी, भरतपुर।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र.(6)
(ब)

बालश्रम और उपेक्षित जीवन

बालश्रम आज समस्त संसार में एक बड़ी चिंता का विषय है तथा गहन चिंतन की उपेक्षा रखता है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने बालश्रम रोकने के लिए 1979 में एक कानून पहले ही पास कर चुकी है। भारत में भी सन् 1986 में 'बालश्रम विनिमय एवं निषेध' कानून बनाया गया जिसके अंतर्गत 6 से 14 वर्ष के बच्चों को किसी भी हानिकारक काम में लगाना कानूनी अपराध है। शहरों में तो यह कानून कुछ प्रभावी नजर आता है परन्तु गाँव से जुड़े खेतिहर बालश्रमिकों के लिये इसका कोई महत्व नहीं है। आज भी गाँव में लगभग 70% बालश्रमिक कार्य कर रहे हैं। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार देश में 1, 26, 66, 000 बालश्रमिक है। आज भी हम बच्चों को होटलों, चाय की दुकान, कारखानों आदि में काम करते देख सकते हैं। जो उम्र उनके पढ़ने लिखने व आगामी जीवन की तैयारी की है वे उस उम्र में ऐसे काम करने में लगे है। इसे समाप्त करने के लिए उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारा जाना परमावश्यक है।

BSER-161/2017

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र.(7)

भारत पर आतंकवाद की छाया

'आतंकवाद' शब्द का अर्थ है - किसी को आतंकित करने का विचार'। अतः जब मनुष्य दूसरे मनुष्य को बिना किसी कारण के सताए या मार-पीट करे तो वह आतंकवाद है। आज हमारा भारत देश आतंकवाद की बड़ी भीषण मार सहन कर रहा है। हमारे देश में आतंकवाद कोई और नहीं बल्कि पड़ोसी देश 'पाकिस्तान' ही फैला रहा है उसकी मंशा 'भारत' को आतंकित कर 'कश्मीर' लेने की है। क्योंकि आतंकवाद से जन-धन की हानि अलावा और कुछ प्राप्त नहीं होता है फिर भी पाकिस्तान इसे पाले हुए है। भारत के ताज होटल पर भी आतंकी हमला इसने ही करवाया था इसी प्रकार पठानकोट आतंकी हमला भी इसी की देन है। क्योंकि जैसा कहा गया है कि - काँटे बोओगे तो काँटे ही मिलेंगे', तो पाकिस्तान स्वयं भी आतंक से पीड़ित होता रहा है। इन दोनों राष्ट्रों को आपसी बातचीत द्वारा इसे रोकना चाहिए तभी हमारा देश सुखी हो पायेगा।

प्र.(8)

(अ) बच्चे जन्म से ही कपास इसलिए लाते हैं क्योंकि जिस प्रकार कपास हल्का, कोमल व मुलायम होता है उसी प्रकार बच्चे का शरीर होता है। जिस प्रकार कपास को चोट नहीं आती उसी प्रकार बच्चों के गिरने पर चोट लगने की संभावना होती ही नहीं। 2

(ब) "दिशाओं में ---- बजाते हुए" पंक्ति का तात्पर्य यह है कि जब बच्चे हाथों पर तेज गति से भागते हैं तो हाथ

परीक्षक द्वारा | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

तीव्र रूप से धम-धम की आवाज करती हैं जो कि मृदंग की ध्वनि के समान चारों दिशाओं में फैल जाते हैं।

(स) जब बच्चे छतों के खतरनाक किनारों पर पहुँच जाते हैं तो उन्हें गिरने से उनकी स्फूर्ती तथा रोमांचित शरीर का संगीत बचा लेता है और ऐसा लगता है मानों पतंग के धागे ने उसे थाम लिया हो।

(द) 'पतंगों के ..... उड़ रहे हैं' पंक्ति का आशय यह है कि बच्चे पतंग उड़ाने में तल्लीन व मस्त हो गए हैं कि उनका मन भी पतंगों के समान ऊँचाई पर उड़ान भरना चाहता है वे समझते हैं कि वे भी उड़ रहे हैं।

प्र(9)

(अ) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि निराला जी ने बताया है कि बादल बार-बार गर्जना करके मूसलाधार वर्षा कर रहें हैं जिससे यह संसार (शोषक वर्ग) भयभीत होकर अपना हृदय थामे हुए हैं अर्थात क्रांति रूपी बादल की वज्र जैसी कठोर हुँकार से पूँजीपति वर्ग भय के मारे काँपने लग गया है।

(ब) शिल्प सौंदर्य:- प्रस्तुत काव्यांश का शिल्प सौंदर्य अत्यन्त बेजोड है-

(i) इसकी भाषा सरल, सहज व सुबोध है व तत्सम शब्दावली से युक्त खड़ी बोली है।

(ii) प्रस्तुत पंक्तियों में 'प्रासाद गुण' है।

(iii) 'हृदय थाम लेता संसार' में भयानक रस की व्यंजना हुई है।

(iv) 'बार-बार' व 'सुन-सुन' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है इसमें रूपक अलंकार की छटा भी है।

परीक्षक द्वारा प्राप्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र० (10)

(अ) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में दूरदर्शन के संचालकों की संवेदनहीन मानसिकता को प्रकट किया है वो समाज से एक अपाहिज व्यक्ति को लगाकर उसकी पीडा को दिखाकर अपने कार्यक्रम को सफल बनाना चाहते थे परन्तु वे असफल रहे। यह उस सामाजिक उद्देश्य की पूर्ती नहीं कर पाती है

(ब) जब बच्चा माँ से चाँद माँगने की जिद करता है तो माँ ममता से पूर्ण होकर उसके हाथ में आईना देती है और कहती है कि देख आईने में चाँद उतर आया है, इस प्रकार वह अपने बच्चे की जिद को पूरा करती है। यही इस पंक्ति का आशय है।

(स)

प्र० (11)

(अ) डॉ. अम्बेडकर के अनुसार जाति प्रथा के शोषक, जीवन, शारीरिक- सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वंतत्रता को स्वीकार करते हैं।

(ब) दूसरों द्वारा निर्धारित कर्तव्य करने की मजबूरी के दुष्परिणाम यह होंगे की वह मनुष्य अपनी रुचि तथा क्षमता के अनुसार कार्य नहीं कर पायेगा और उसकी कार्यकुशलता दब कर रह जायेगी। यहाँ तक उसे भूखा भी मरना पड सकता है

(स) स्वतन्त्रता वह स्थिति है जब मनुष्य को अपना व्यवसाय स्वंय चुनने का अधिकार है जबकि दासता वह स्थिति है जब मनुष्य दूसरों द्वारा निर्धारित कर्तव्यों में रहकर ही काम करे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र.(12)

(अ) 'काले मेघा पानी दे' निबंध में लेखक की जीजी ने जब लेखक को बताया कि 'त्याग' व 'दान' क्या हैं तो इससे उनका जीवन में महत्व सामने उजागर होता है। उन्होंने बतलाया की वह वस्तु जिसकी हमें सबसे अधिक आवश्यकता है और जो हमें सर्वाधिक प्रिय है यदि हम उसे किसी को दान में दें तो उसे 'त्याग' कहते हैं न कि उसे जिसमें तुम्हारे पास उसकी भरमार हो और तुम उसे किसी को दो। इसका महत्व हमारे जीवन में यह होता है कि बाद में वही वस्तु हमें चौगुनी-अठगुनी होकर प्राप्त होती है।

(ब) 'उसने क्षत्रिय का काम किया है' यह शब्द राजा साहब ने लुट्टन पहलवान के लिये कहे थे। जब कुश्ती के मुकाबले में वह 'शेर के बच्चे' को चित कर देता है तो इस पर खुश होकर राजा साहब उसका नाम 'लुट्टन सिंह' रखते हैं इस पर राजपण्डित उनसे कहता है महाराज नीच ... जाति का है तथा सेनापति भी इस पर आपत्ति जताते हैं कि वह 'सिंह' कैसे तब महाराज हंस कर कहते हैं कि उसने क्षत्रिय का काम किया है

(स) सकिया भारत से लाहौर अपने भाईयों से मिलने आई थी। तब सिखबीबी जो कि हूबहू उसकी माँ जैसी थी उन्होंने उसे लाहौरी नमक लाने को कहा। जब सकिया ने अपने भाई से पूछा, जो कि वहाँ पुलिस में अफसर है, कि क्या यहां से नमक ले जा सकते हैं तो उसने उससे साफ मना कर दिया और कहा कि कहीं पकड़े गये तो बदनामी होगी चूँकि यह गैर कानूनी है तथा कहा कि क्या भारत में नमक नहीं होता ?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्र (13)

(ब) लेखक आनन्द यादव संघर्ष जीवन को उत्कृष्ट बनाता है हम इस कथन से पूर्णत सहमत हैं। पहले तो वह विद्यालय जाने के लिए अपने पिता की खेतों पर काम करने की शर्त पर राजी हो गया। वह पढ़ता भी था और खेतों में काम भी करता था फिर उसने वसंत पाटिल को देखकर घर पर मेहनत करनी शुरू कर दी तथा बाद में मराठी अध्यापक का सानिध्य पाकर व अपने कठिन परिश्रम से वह एक श्रेष्ठ कवि बनकर सामने आया। इसप्रकार वह कठिन परिश्रम से अपना नाम ऊँचा कर पाया।

(स) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ में बताई गई सिन्धु घाटी सभ्यता सुनियोजित ढंग से व्यवस्थित थी। वह सिन्धु नदी के तटवर्ती क्षेत्र में बसी थी। वह सभ्यता 'ग्रिड शैली के अनुसार बसी थी जिसमें सीधी लम्बी व आड़ी सड़कें थी सड़कों के दोनों ओर मकान थे। वहाँ पर नालियाँ पक्की व ढकी हुई थी। गंदे पानी के लिये शहर से बाहर व्यवस्था की गई थी। वहाँ का सबसे बड़ा आकर्षण वह जलकुण्ड था जो चालीस फीट चौड़ा, पच्चीस (लम्बा) फीट चौड़ा व सात फीट गहरा था। इसके उत्तर दक्षिण में सीढ़ीयाँ थी। इसके सबसे ऊँचे टीले पर बौद्ध स्तूप है। उससे नीचे मजदूरों के रहने की व्यवस्था थी व पूर्वी भाग में शहर के अमीर लोग रहते थे इस प्रकार यह सभ्यता पूरी तरह सुनियोजित थी।

परीक्षक द्वारा प्राप्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्र. (14) (अ) ऐन फ्रेंक ने अपनी डायरी किट्टी को सम्बोधित करके लिखी क्योंकि उसके परिवार कोई सदस्य उसकी भावनाओं को नहीं समझ पा रहा था सभी उसे अनाड़ी व नादान समझते थे कोई उसकी प्रतिभा को नहीं पहचान पाया इसलिए उसने अपनी डायरी किट्टी को सम्बोधित करके लिखी जो उसकी हर बात सुनती थी।

(ब) आनन्द यादव ने सबसे पहले अपनी को हनाजी राव से बात करने को राजी किया जब वे हनाजी राव के पास पहुँचे तो उन्होंने सारी बात हन्ना जी राव से कही व उन्होंने कहा कि वे उनकी बात के बारे में उसके पिता को न बतायें तब हन्ना जी राव ने उसके पिता से उसे पढ़ने भेजने के लिए कहा परन्तु उसने इसके लिए शर्त रखी जो लेखक ने खुशी-२ स्वीकार कर ली व उसका नाम पाठशाला में लिखवा दिया गया।

प्र. (15) (अ) लेखिका 'ऐन फ्रेंक' ने 'डायरी के पन्ने' में औरतों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। उसके अनुसार औरतों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं थे उसे घर से कदम रखने तक की इजाजत नहीं थी। सब उसे एक भोग विलास का पुतला मानते थे। उसे बस बच्चा पैदा करने वाली मशीन समझा जाता था उसकी स्तर पर उपेक्षा की जाती है। उन्हें किसी प्रकार की शिक्षा भी नहीं दी जाती थी। ऐन का मानना था कि जो औरत बच्चे को जन्म देते समय अपनी सुन्दरता को त्याग देती उसके साथ व्यवहार क्यों होता है वह न तो जंग में जख्मी हुए सिपाही से भी अधिक बहादुर है उसे भी सम्मान मिलना चाहिए।

समाप्त